यह गीत किसने कहा कि तू प्यार का सागर है। शरीर अथवा जीव की आत्मा ने कहा है। वो गीत गाने वाले कोई इसको समझते नहीं हैं; क्योंकि बहुतों से ज्ञान की बातें सुनते हैं। क्यों सुनते हैं? बन्दर लोग। अब तुम बाहर वालों की कुछ भी बातें नहीं सुनते हो। तुम अब सुनते ही हो ज्ञान सागर से। आगे तो बन्दरों के लिए दिखाते थे– सी नो ईविल, हियर नो ईविल। अब बुद्धि में आया है तो मनुष्यों के चित्र बनाते हैं। हियर नो ईविल, सी नो ईविल। बच्चों के भी चित्र बनते हैं। तो अब बाप समझाते हैं कि मैं मनुष्यों को बन्दर से मंदिर मिसल बनाता हूँ। मनुष्यों को ज्ञान नहीं है तो बन्दर मिसल हुए ना। अब बाप कहते हैं कि यह जो कुछ तुम सीखते आए हो वो सब ही भक्तिमार्ग की बातें हैं। ऐसे नहीं कहते हैं कि तुम नहीं पढ़ो। शरीर निर्वाह अर्थ धंधा आदि नहीं करेंगे तो खावेंगे कहाँ से? ऐसे भी तो नहीं हो सकता है कि शिवबाबा बैठकर सबको ही खिलावेंगे। गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए कमल फूल समान बनो। बाकी भक्तिमार्ग वाले जो सुनाते हैं उनसे झूठा शास्त्र आदि मत सुनो। मनुष्य गुरुओं से तो कुछ मत सुनो। जो शास्त्र आदि सुनाते हैं उनको ही गुरु कहा जाता है। अब इन साधुओं और गुरुओं आदि की कोई बात मत सुनो। एक जो सतगुरु है उनकी ही बातें सुनो। वो सतगुरु एक ही है अशरीरी। ज्ञान का सागर कब भी कोई शरीरधारी नहीं हो सकता है। बाप ही इसमें आए कर तुम सब बच्चों को अपना और सृष्टि की आदि–मध्य–अंत का ज्ञान देते हैं। वो है ही सुप्रीम आत्मा। बाप समझाते हैं कि तुमने जन्म–जन्मांतर ही माया के धक्के खाए हैं। दुनिया का अंत है। जिसने फिर तुमको ज्ञान मिलता है। ज्ञान मिलता ही है संगम पर। जबकि हम फिर स्वर्ग में जाते हैं। इसको कहा जाता है रूहानी ज्ञान। सुप्रीम रूह रूहों को ज्ञान देती है। रूहों का बाप है ना। मनुष्य किसी की भी सद्गति कर नहीं सकते हैं। मनुष्यों में ज्ञान ही नहीं है। ज्ञान का सागर तो बाप ही है जिससे ही तुम ज्ञान की नदियों का निकलना होता है। बाप के द्वारा सब कुछ सीखती हो। तुम्हारी बुद्धि में यह याद रहना चाहिए कि शिवबाबा हमको पढ़ाते हैं। वो ही फिर हमको साथ ले जावेंगे। रूहानी बाप जिस्मानी बात कोई नहीं सिखलाते हैं। वो तो सृष्टि की आदि–मध्य–अंत का ज्ञान बैठ देते हैं। तुम सब एक्टर हो इस ड्रामा के। तो क्रियेटर, मुख्य एक्टर, डायरैक्टर का पता होना चाहिए ना। वो तो होते हैं जिस्मानी एक्टर्स। तुम हो रूहानी। सीखती सब कुछ आत्मा ही है; परन्तु वहाँ सीखते ही हैं अज्ञान। बाप है फिर ज्ञान का सागर तो तुमको ज्ञान ही सिखाते हैं। शास्त्र आदि जो भी पढ़ते हैं वो ही हैं सब अज्ञान के सागर। जैसे कई बच्चे कहते हैं कि बाबा, अब हम जिस्मानी पढ़ाई क्यों पढ़ें? बाबा कहते हैं कि ना पढ़ो तो भी हर्जा नहीं है; परन्तु इस रूहानी पढ़ाई में भी अच्छी दिल हो तब छोड़ो। अगर फिर रूहानी पढ़ाई कभी छोड़ दी तो फिर तकलीफ हो जावेगी। इसमें पवित्रता की बातें बहुत मुख्य हैं। इसमें ही गिर पड़ते हैं। बच्ची गिरी या बच्चा गिरा तो दोष तो दोनों का ही हो जाता है ना। ऐसा भी बहुत करके होता है कि जो दोनों ही विकार वश हो जाते हैं। यह पढ़ाई है ही भविष्य के लिए। वो फिर यह ज्ञान लेकर या शास्त्र आदि पढ़कर क्या करेंगे! वो तो और ही अधम गति को पावेंगे। सब कहते भी हैं कि हम सब ही पतित, भ्रष्टाचारी, विकारी हैं। विकारों से ही तो पैदा होते हैं ना। साधु–सन्यासियों से पूछो तुम्हारा जन्म कैसे हुआ? तो वो कभी भी नहीं सुनावेंगे; क्योंकि वो भी तो विख से ही पैदा होते हैं। इसलिए वो बात ही नहीं सुनते हैं। कहते हैं कि इसको भूल जाओ। हम तो ब्रह्म को ही याद करते हैं। ब्रह्म में ही जाकर लीन होना है। अहम् ब्रह्मास्मि कहते हैं। माना कि मैं ही ब्रह्म हूँ। इस सृष्टि का मालिक हूँ। माया कोई रची नहीं जाती है। माया तो है ही रावण। अहम् ब्रह्मास्मि का तो कोई अर्थ ही नहीं निकलता है। अब बाबा ने समझाया है कि तुम सब ही विकारी थे। इतना भी समझते नहीं थे। अब आत्मा सो परमात्मा कैसे हो जावेगी। बुद्धुओं को कुछ भी पता नहीं है। कहते भी हैं कि मनुष्य पुनर्जन्म लेते हैं; परन्तु उसका हिसाब कुछ भी नहीं जानते हैं। ना ही किसी शास्त्र में ही लिखा हुआ है। अब बाबा बैठ समझाते हैं कि तुम पूरे 84 जन्म लेते हो। आने से ही पहले–2 मैं मिलता हूँ। यह जो ब्रह्मा का अन्त का शरीर है इसमें ही मैं आ करके प्रवेश करता हूँ। यह बातें साधु–संत आदि कोई नहीं जानते हैं। तुम जानते हो फिर भी भूल जाते हो। यह तुम्हारा आखरी जन्म है पावन बनने का। भक्तिमार्ग में जो कुछ भी साधु–संत आदि करते हैं वो करते ही हैं मुक्तिधाम में जाने के लायक बनने के लिए। मगर बन नहीं सकते हैं। नालायक से लायक बनाने वाला एक ही बाप है। रावण नालायक बना

देता है। इनको आसुरी सम्प्रदाय भी कहा जाता है। खुद भी कहते हैं कि हमको रावण से छुड़ाओ; क्योंकि अब रावण राज्य है; परन्तु वो तो समझते नहीं हैं। स्त्री–पुरुष दोनों हैं ना। वो है रावण तो वो है रावणी। रावण के 10 सिर भी इकट्ठे कर दिखाए हैं। 5 विकार स्त्री के, 5 विकार पुरुष के। इसलिए मिलाकर रावण सम्पद्राय कहा जाता है। तुम भी समझते हो कि हम पहले रावण सम्प्रदाय थे। अब हम बाप की ईश्वरीय सम्प्रदाय है। ईश्वरीय सम्प्रदाय वाले आसुरी सम्प्रदाय वालों के साथ रह नहीं सकते हैं। तुम अब संगमयुग पर हो। कलियुग में नहीं हो। और सब ही हैं कलियुगी आसुरी सम्प्रदाय वाले। रात–दिन का फर्क है। तुम तो हो हंस, वो हैं बगुले। तुम्हारी आत्मा पावन बन जावेगी फिर यह पुराना शरीर तुम्हारा खत्म हो जावेगा। कर्मातीत अवस्था हो जावेगी। तब फिर यह शरीर छूट जावेगा और सम्पूर्ण बन जावेंगे। जब तक तुम समर्पण नहीं बने हो तब तक सम्पूर्ण लाटरी मिल नहीं सकती है। रिहर्सल होती रहती है। ट्रायल कर रहे हो। जो कुछ कहते हो कुछ ज़रूर करके भी दिखावेंगे। अभी तो आगे से ..... भी बहुत ही होगी। मौत का बाज़ार गर्म हो रहा है। तुम जानते हो बॉम्बस आदि की भी बाज़ार कितनी गर्म है। वहाँ तो आत्मा एक पुराना शरीर छोड़ जाए कर दूसरा लेती है। आत्मा को तो एक छोड़ दूसरा लेना ही पड़ता है। मौत भी शरीर की होती है ना। शरीर विनाशी है। बाकी आत्मा तो जाकर दूसरा ही शरीर लेती है। अब तुम समझते हो कि इस मृत्युलोक का अंत और अमरलोक की आदि आने वाली है। हम अमरकथा सुन रहे हैं। इस समय हम सब पार्वतियाँ हैं। अब अमरकथा एक ने तो नहीं सुनी होगी। तुम सब बच्चे सुनते हो। सत्यनारायण की कथा तुम सब सुनते हो। वो सब हैं झूठी कथाएँ। किसी खास मास में सत्यनारायण की कथा सुनते हैं। तुम अब समझते हो कि हम भी सम्पूर्ण चंद्रमा मिसल बन रहे हैं। तुम्हारी यह है बेहद की सत्यनारायण की कथा। बेहद का बाप सुनाते हैं। और कोई धर्म वाले तो यह जानते ही नहीं हैं कि क्या सत्य है। भारत में ही सुनते हैं। देवताओं की पूजा भी यहाँ ही होती है। तुम बच्चे विश्व को नया बनाते हो इसलिए ही तुम्हारे मंदिर बनाते हैं। मंदिर में यादगार सब है, मगर जानते कुछ भी नहीं हैं। पूजा के लिए सब कहेंगे कि यह क्राइस्ट की है। यह पूजा की चीज़ है। पूजा करते हैं, मगर यह किसने स्थापन किया, यह नहीं जानते हैं। यह भी तुम ही समझते हो। वहाँ जो आत्माएँ आती हैं, वृद्धि को पाती रहती हैं। अब हम जावेंगे सतयुग में। तब भी सब इकट्ठे ही जावेंगे। यहाँ से पहले शांतिधाम में जाएँ, फिर नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार अपनी प्रालब्ध भोगने लिए फिर तुम यहाँ आवेंगे। किसी को यह पता ही नहीं है कि सतयुग में यह इतने धन पदार्थ किसने दिए। ज़रूर अगले जन्म के अपने पुरुषार्थ से ही ऐसा पद मिलता है ना। भक्तिमार्ग में एक जन्म की प्रारब्ध मिलती है, फिर दूसरे जन्म में पुरुषार्थ करके फिर पद पाते हैं। जन्म–जन्मांतर ही ऐसे चलता रहता है। यह जो तुम पढ़ाई कर रहे हो (इस)का फल 21 जन्मों तक मिलेगा। भक्तिमार्ग में अल्प काल क्षण भंगुर सुख मिलता है एक जन्म के लिए। तुम अब के पुरुषार्थ से 21 जन्म के प्रालब्धियें बनते हो। संगम पर ही बाप आकर 21 जन्मों की प्रालब्ध बनवाते हैं। इसलिए 21 पीढ़ियाँ गाई हुई हैं। कन्या वो जो 21 कुलों का उद्धार करे। अब तुम ही ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ हो ना। तुम ससुर और पियर घर दोनों का ही उद्धार करते हो। बाप कहते हैं कि बच्चे, चैरिटी बिगन एट होम। घर वालों को, फिर सगे–संबंधियों को, फिर आस–पास वालों को लाना है। बाप हमेशा कहते हैं कि भक्तों को जाकर सुनाओ। बाकी जो ऐसे समझते हैं कि सृष्टि संकल्प से बनी हुई है उनके साथ माथा मारने की दरकार नहीं है। समय वेस्ट नहीं करना है। दान हमेशा पात्र को करते हैं। अपात्र को देना नहीं है। उसको देने से समय वेस्ट, धन वेस्ट होगा। तुम्हारा यह समय बहुत ही कीमती है। जितना बाप को याद करेंगे उतना ही तुम निरोगी बनेंगे। तुम्हारी शक्ति बढ़ेगी। यह शरीर तुम्हारा बहुत कीमती है। इससे तुम 21 जन्मों के लिए प्रारब्ध बनाते हो। रोगी को इंजेक्शन गाया जाता है। गीता भी है ना कि ज्ञान अंजन सतगुरु... दिया। अब तुम जानते हो कि परमात्मा सर्वव्यापी है यह कहना अज्ञान है। मनुष्य बिल्कुल ही अज्ञान अंधेरे में पड़े हुए हैं। भक्तिमार्ग के शास्त्र पढ़ते–2 अंत में पूरे अंधेर बन पड़ गए हैं। इसको ही कहा जाता है कुम्भकरण की नींद में सोना। ऐसों का नाश करने के लिए ही कृष्ण को स्वदर्शनचक्र दिखा दिया है। उनका धंधा ही हिंसा का दिखाया है। एक मैगजीन भी निकलती है जिसमें सब ..... के ही चित्र दिखाए हैं। अब मारने की तो कोई बात ही नहीं है। यह तो अब तुम जानते हो कि अंत

में मूसलधार बरसात पड़ेगी। अकाल पड़ेगा। बॉम्ब्स गिरेंगे। 5000 साल पहले की तरह फिर से यह आपदाएँ आदि होंगी। फिर कोई अस्पताल आदि नहीं रहेंगी। तुम जानते हो विनाश के बाद सब कुछ फिर नया बनेगा। नर्क का विनाश हो जावेगा। फिर ... होगा। वहाँ फिर देवी–देवताएँ ही होंगे। यह उनको किसने राजाई दी? ज़रूर कहेंगे, भगवान ने दी संगम पर। अब तुम प्रारब्ध बनाए रहे हो। 84 जन्म लेते–2 तुम आसुरी सम्प्रदाय बन गए हो। अब फिर ईश्वरीय सम्प्रदाय बन रहे हो। फिर दैवी सम्प्रदाय बनेंगे। इस पर ही हम सो का मंत्र है। हम सो ब्राह्मण, फिर हम सो देवता बनेंगे... वो फिर कह देते आत्मा सो परमात्मा है, परमात्मा सो आत्मा है। तुम बच्चों को अब यह निश्चय हुआ है कि हमने 84 जन्म पूरे किए हैं। अब घर जाना है। इसलिए बाप कहते हैं मनमनाभव। वो गीता जो मनुष्यों ने बनाई है वो है भक्तिमार्ग के लिए। आदि सनातन देवी–देवता धर्म तो था ना। उनका शास्त्र भी था। उस गीता में तो फालतू की बातें लिख दी हैं। जिनने(जिसने) गीता बनाई उनको क्या पता? यह सब हैं भक्ति दुर्गतिमार्ग के लिए ही शास्त्र। अगर हम यह कहते हैं कि यह झूठे हैं, दुर्गति के शास्त्र हैं तो लड़ते हैं। इसलिए बहुत ही युक्ति से समझाना हो(ता) है। प्रदर्शनी में भी साफ–2 समझाया जाता है। जैसे यह रथ का चित्र है। तो सिद्ध किया जाता है भागीरथ कौन–सा है। तो मनुष्य आप ही समझ जावेंगे इस हिसाब से तो बरोबर ही गीता झूठी है। समझते भी हैं फिर बाहर जाने से ही बेसमझ बन जाते हैं। कहते भी हैं बरोबर भगवान ने गीता सुनाई। हाँ–2 करते फिर भी समझते तो कुछ नहीं हैं। जैसे बंदरों को सिखाया जाता है ना। जो मंदिर बनने वाले होंगे उन्हों को अच्छी रीत अंदर बैठ जावेगा। बाकी तो सिर्फ कहते हैं कि अच्छी बातें तो बरोबर हैं। बाहर गया तो फिर ज्ञान वहाँ का वहाँ ही रहा। जैसे सतसंग आदि में सुनते हैं, बाहर जाते हैं फिर सब भूल जाते हैं। यह नॉलेज किसी भी शास्त्र आदि में नहीं है। बाप बैठ समझाते हैं कि यह शास्त्र आदि तो किसी भी काम के नहीं हैं। मैं तुमको जो सुनाता हूँ वो ही सुनते रहो। यह ज्ञान सुनते ही हो इस संगम पर। फिर द्वापर में इन्होंने कहाँ से लाया, तुमको सुनाया, फिर तो ज्ञान ही खत्म हो जाता है। 5000 साल बाद फिर तुम ही सुनेंगे। बाप कितना ही सहज रीत समझाते हैं। एक है लौकिक बाप, एक है पारलौकिक बाप। दो बाप हैं ना। पारलौकिक बाप को ही बुलाते हैं कि आकर हमको पावन बनाओ। दुख हर कर सुख दो। सतयुग में तो ऐसे नहीं बुलाते हैं। तुम बच्चे समझते हो कि बाप संगम पर ही आ करके 21 जन्मों के लिए इतना सुख देते हैं कि जो सतयुग में फिर कोई पुकारते ही नहीं हैं। फिर जब रावण राज्य होता है तब याद करते हैं। यह है ही पापात्माओं की दुनिया। सबसे बड़ा पाप है कि जो कहते हैं कि ईश्वर सर्वव्यापी है। झूठे शास्त्र पढ़ने से फल कुछ भी मिलता नहीं है। हाँ करके अल्प काल के लिए ही कमाई होती है। साधु–संत आदि शास्त्र बैठ पढ़कर सुनाते हैं तो उन्हों को पैसे आदि मिलते हैं। संस्कृत श्लोक उठा फिर उसका बैठकर अर्थ देते हैं। बाबा तो तुमको कोई भी श्लोक आदि नहीं सुनाते हैं। बाबा तो यह ज्ञान तुमको 30 सालों से सुना आते हैं। सुनाते–2 बाबा चले जाते हैं फिर तुम पुरुषार्थ अनुसार नम्बरवार पास हो जाते हो। इसलिए ही गाया जाता है कि चिड़ियाओं ने सागर को हप किया। अब वो पानी को कैसे, कब हप कर सकती है क्या? यह सब ही हैं फालतू की बातें। वो तो वास्तव में तुम हो जिनको ही बाबा ज्ञान सुनाते हैं। ज्ञान सागर को तुम हप करती हो। शास्त्रों में तो क्या–2 लिख दिया है। कितनी ही झूठी कथाएँ हैं। झूठे चित्र आदि बैठ बनाए हैं। ल०ना० का फोटो मिल सकता है क्या? सा० कर सकते हैं, फोटो नहीं निकाल सकते। शिवबाबा का चित्र भी नहीं निकल सकता है। देवताओं का भी तुम सब सा० करती हो, फोटो नहीं निकाल सकती हो। तुम जानते हो भक्तिमार्ग में जो जिस भावना से पूजा करते हैं उनको वो ही सा० हो जाता है। कोई कृष्ण गोरा देखते हैं, कोई साँवरा देखते हैं। अब ठीक क्या है, कुछ भी नहीं जा(नते) हैं। इसको ही कहा जाता है अंधे। तुम भी अंधे की औलाद थे। रावण की औलाद थे। अब ईश्वरीय औलाद (ब)ने हो। वो हैं असुर, तुम हो देवताएँ। लड़ाई आदि की तो बात ही नहीं है। तुम असुर से देवता बन रहे हो। देवताएँ स्वर्ग में रहने वाले, असुर नर्क में रहने वाले। उनकी फिर लड़ाई कैसे हो सकती है। यह सब है ही झूठी बातें। सच की तो रत्ती नहीं है। नदियाँ आदि में कितना स्नान करते हैं। घड़ी–2 टुबका तारने जाते हैं। तुम ज्ञान टुबका लगाती हो। रोज़ ज्ञान स्नान ज़रूर करना पड़े। तुम बच्चे जानते हो बाप आया हुआ है सतोप्रधान दुनिया बनाने। 5 तत्व आदि सब सतोप्रधान बन जावेंगे। सतयुग में हर चीज़ सतोप्रधान बन जावेगी। 5 तत्व भी पवित्र, शरीर भी सतोप्रधान प्रकृति से बनता है। ओम शांति।